जीविका
JEEViKA
बिहार सरकार

THE ChangeMakers

April to June 2024 Issue 20

Transforming Rural Bihar

परियोजना प्रबंधन विषेशांक

सहायक गतिविधियों की भूमिका Page 01

Financial Inclusion to All Page 04

Digital Transformation Page 07

बड़की दीदी Page 19

From the editor's desk

Dear Readers,

Greetings from JEEVIKA!

We celebrate the spirit of collective support and empowerment that defines JEEVIKA. At the coronary heart of our adventure lies a dedication to strengthening communities, fostering resilience, and creating sustainable livelihoods. Through unwavering assist, we hold to transform lives, making sure that each person, in particular ladies, has the sources, knowledge, and opportunities to thrive.In this version of The Changemakers, we bring you inspiring stories of unity, wherein JEEVIKA's projects are bridging gaps, nurturing aspirations, and fostering an inclusive surroundings. From economic empowerment to social upliftment, our paintings resonates with the electricity of collaboration and shared increase.Our regular capabilities, "Didi ki Kahani, Didi Ki Zubani" and "Badki Didi", remain a supply of proposal, echoing the voices of resilience and backbone.

We amplify our heartfelt gratitude for your endured help on this adventure of transformation.

Happy Reading!

Regards
Mahua Roy Choudhury
pc.gkm@brlps.in

EDITORIAL TEAM

- **Mrs. Mahua Roy Chaudhury**
  Program Coordinator (G&KM)
- **Mr. Pawan Kr. Priyadarshi**
  State Project Manager (Communication)
- **Mr. Rahul Kumar**
  Project Manager (DER)

संदेश

श्रीमती अभिलाषा कुमारी शर्मा (भा.प्र.से.)
अपर मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका (BRLPS)

दीदियों को आत्मनिर्भर बनाना और उनके परिवार को विकास की राह पर अग्रसर करना हमारा सर्वोच्च लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जीविका द्वारा विभिन्न परियोजनाओं को क्रियान्वयन किया जा रहा है। किसी भी परियोजना की सफलता उसके कुशल प्रबंधन, चरणबद्ध प्रक्रियाओं, उसकी नियमित निगरानी और बेहतर अनुश्रवण पर निर्भर करता है। जीविका ने इन माध्यमों से परियोजनाओं का सफल क्रियान्वयन करते हुए बिहार में विकास की नींव मजबूत की है। एक सशक्त और स्थायी विकास के लिए परियोजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन और प्रबंधन न केवल आवश्यक है, बल्कि दीदियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का जरिया भी है।

महिलाओं के हर हाथ को मजबूत करने के उद्देश्य से शुरू की गई विभिन्न योजनाओं की वे न केवल लाभार्थी हैं बल्कि परियोजना के प्रबंधन एवं इसके क्रियान्वयन में वे सहभागी भी हैं। जमीनी स्तर पर परियोजनाओं को प्रभावी तरीके से लागू करने में वे अपनी महती भूमिका निभा रही हैं। इसके लिए विभिन्न सामुदायिक संगठन स्तर पर महिलाओं का नियोजन, प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग, निगरानी और अनुश्रवण जैसी विधियों का सहारा लिया गया है। इससे दीदियों की सक्षमता बढ़ी है और वे परियोजना प्रबंधन में भी सहायक भूमिका निभा रही हैं।

यह विशेष अंक हमारे उन प्रयासों की कहानी है, जिससे जमीनी स्तर पर बदलाव आ रहे हैं। मैं आप सभी को इस अंक के माध्यम से जीविका की अनगिनत सफलताओं का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करती हूँ। हमें विश्वास है कि आपके प्रोत्साहन और सहयोग से हम अपनी इस यात्रा में और ऊंचाई पर पहुंचाएंगे।

CONTENTS

जीविका परियोजना में सहायक गतिविधियों की भूमिका.............................. 01

Financial Inclusion to All: JEEVIKA's Transformation of Rural Bihar........... 04

Empowering Rural Bihar through Digital Transformation............... 07

Strengthening JEEVIKA's Effectiveness through M&E and Research........ 10

संदेश

श्री हिमांशु शर्मा (भा.प्र.से.)
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका (BRLPS)
राज्य मिशन निदेशक, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान

महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु जीविका ने विभिन्न परियोजनाओं को चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वित किया है। सामुदायिक संगठनों के माध्यम से महिलाओं को संगठित करते हुए उन्हें विभिन्न जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़कर उनका आर्थिक स्वावलंबन किया जा रहा है। साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक मुद्दों पर उनमें जागरूकता का संचार किया गया है। दीदियों के सामर्थ्य को केंद्र में रखकर परियोजनाओं का प्रारूप तैयार किया गया। परियोजना के कुशल प्रबंधन के साथ–साथ निरंतर प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग और उचित मार्गदर्शन ने इन परियोजनाओं को जमीनी स्तर पर सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परियोजना प्रबंधन के सिद्धांतों का अनुपालन हमारी सफलता का मूल आधार है।

कृषि, पशुपालन और छोटे–छोटे उद्यमों या व्यवसायों के जरिये हमने दीदियों को जीविकोपार्जन के स्थायी साधनों से जोड़ा है। इस प्रक्रिया में योजना निर्माण, निगरानी और मूल्यांकन के विभिन्न चरणों का पालन किया गया है, जिससे परियोजना का प्रभावी क्रियान्वयन हो सके और दीदियों को इसका वास्तविक लाभ मिल सके। जीविका ने विभिन्न सरकारी विभागों और सरकार की योजनाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए दीदियों को आर्थिक, तकनीकी, बाजार और अन्य प्रकार का सहयोग प्रदान किया है। इससे उनकी आय में वृद्धि हुई है और वे आत्मनिर्भर बन रही हैं।

इस विशेष संस्करण में हम अपने पाठकों को परियोजनाओं की सफलता की कहानियों से रू–बरू कराना चाहते हैं, जिससे प्रेरणा लेकर हम भविष्य में और अधिक उन्नति की राह पर आगे बढ़ सकें। आपकी साझेदारी और समर्थन के लिए धन्यवाद। हम आशा करते हैं कि हमारा यह प्रयास समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

CONTENTS

ग्रामीण विकास में ज्ञान प्रबंधन और संचार की भूमिका 14
बड़की दीदी 19
मन की कलम से 21
Events 22

01 सहायक गतिविधियों की भूमिका

07 Digital Transformation

10 M&E and Research

14 ज्ञान प्रबंधन और संचार की भूमिका

जीविका परियोजना में सहायक गतिविधियों की भूमिका

ग्रामीण विकास की प्रेरणास्त्रोत योजनाएँ

जीविका परियोजना बिहार में ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसने महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र विकास को बढ़ावा देना है। जीविका परियोजना के तहत सहायक गतिविधियों का योगदान इस लक्ष्य की प्राप्ति में महत्वपूर्ण साबित हुआ है। इन सहायक गतिविधियों में मानव संसाधन, वित्त, प्रशासन, खरीदारी, संचार, प्रबंधन सूचना प्रणाली (एम.आई.एस.), और लॉजिस्टिक जैसे महत्वपूर्ण इकाई की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. मानव संसाधन : संगठनात्मक संरचना और क्षमता निर्माण

मानव संसाधन इकाई जीविका परियोजना की रीढ़ है, जो परियोजना के सुचारू संचालन और विकास के लिए आवश्यक है। मानव संसाधन विभाग न केवल कर्मचारियों की भर्ती, प्रशिक्षण और विकास के लिए जिम्मेदार होता है, बल्कि यह उन्हें संगठित और सशक्त बनाने का भी कार्य करता है। महिलाओं को विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं के तहत संगठित करने के लिए, मानव संसाधन इकाई उनकी क्षमताओं का आकलन करता है और उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से, ग्रामीण महिलाएं अपनी क्षमता को पहचानने और उसे विकसित करने में सक्षम होती हैं, जो उनके आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

2. वित्त : वित्तीय अनुशासन और पारदर्शिता

वित्त इकाई किसी भी परियोजना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, और जीविका परियोजना भी इससे अलग नहीं है। वित्त इकाई

इस परियोजना के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन करता है। इसमें बजट निर्माण, वित्तीय योजना, धनराशि का आवंटन, और व्यय की निगरानी शामिल होती है। वित्तीय पारदर्शिता और अनुशासन बनाए रखना इस विभाग की मुख्य जिम्मेदारी है। इसके अलावा, वित्त इकाई समूह के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करता है, जिससे वे अपने छोटे व्यवसायों को शुरू और विस्तार कर सकें। यह वित्तीय सहायता महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का आधार बनती है।

3. प्रशासन : सुव्यवस्थित संचालन

प्रशासन इकाई जीविका परियोजना के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक प्रशासनिक कार्यों को संभालता है। इसमें कार्यालय प्रबंधन, दस्तावेजीकरण, और दैनिक कार्यों की निगरानी शामिल होती है। प्रशासनिक गतिविधियों का सही प्रबंधन परियोजना की सफलता के लिए महत्वपूर्ण होता है। प्रशासन इकाई इस बात को सुनिश्चित करता है कि सभी गतिविधियां ससमय और कुशलता से संचालित हों। इसके अलावा, यह इकाई विभिन्न इकाईयों के बीच समन्वय स्थापित करता है, जिससे परियोजना के लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से पूरा किया जा सके।

4. खरीदारी : संसाधनों की उपलब्धता

खरीदारी इकाई परियोजना के लिए आवश्यक सामग्रियों और सेवाओं की खरीद/मनोनयन सुनिश्चित करता है। यह इकाई विभिन्न सामग्रियों की गुणवत्ता, कीमत, और उपलब्धता का आकलन करता है और उनके समय पर वितरण की व्यवस्था करता है। जीविका परियोजना में, खरीदारी इकाई का कार्य केवल सामग्रियों की खरीद तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होता है कि वे सामग्रियां महिलाओं द्वारा संचालित व्यवसायों के लिए लाभकारी हों। इस प्रक्रिया के माध्यम से, महिलाओं को अपने व्यवसाय के लिए आवश्यक संसाधनों की समय पर और उचित कीमत पर प्राप्ति सुनिश्चित होती है, जो उनके आर्थिक विकास में सहायक होती है।

5. संचार : जागरूकता एवं समन्वय

संचार इकाई जीविका परियोजना के प्रचार–प्रसार और जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह इकाई ग्रामीण क्षेत्रों में परियोजना की जानकारी को प्रभावी ढंग से प्रसारित करता है, जिससे अधिक से अधिक महिलाएं इस परियोजना से जुड़ सकें। संचार विभाग विभिन्न मीडिया चौनलों के माध्यम से जागरूकता अभियानों का संचालन करता है और महिलाओं को उनकी अधिकारों और अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इसके अलावा, यह इकाई परियोजना के आंतरिक एवं बाह्य संचार को समन्वित करता है, जिससे सभी हितधारकों के बीच प्रभावी संवाद स्थापित हो सके।

6. प्रबंधन सूचना प्रणाली : डेटा प्रबंधन और विश्लेषण

प्रबंधन सूचना प्रणाली इकाई परियोजना के संबधित आकड़ा का प्रबंधन और विश्लेषण करता है। यह इकाई परियोजना की गतिविधियों का आकड़े एकत्र करता है और उसका विश्लेषण करता है, जिससे परियोजना के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया

जा सके। प्रबंधन सूचना प्रणाली इकाई विभाग आकड़ो का उपयोग करके विभिन्न रिपोर्ट तैयार करता है, जो परियोजना के निर्णय–निर्धारण में सहायक होती है। इसके अलावा, यह विभाग विभिन्न हितधारकों को समय पर और सटीक जानकारी प्रदान करता है, जिससे परियोजना के लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से पूरा किया जा सके।

7. लॉजिस्टिक : संचालन में सहूलियत

लॉजिस्टिक इकाई परियोजना के लिए आवश्यक सामग्री और सेवाओं की ससमय पर और सुरक्षित आपूर्ति सुनिश्चित कराता है। इसमें वस्त्र, कृषि उपकरण, और अन्य आवश्यक सामग्रियों का भंडारण, परिवहन, और वितरण शामिल होता है। लॉजिस्टिक इकाई यह सुनिश्चित करता है कि सभी सामग्रियां समय पर और सही स्थान पर पहुचाई जाएं, जिससे परियोजना की गतिविधियों में कोई बाधा न हो। इसके अलावा, यह इकाई विभिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले प्रशिक्षण और बैठकों के लिए आवश्यक व्यवस्था भी करता है।

सहायक गतिविधियाँ

जीविका परियोजना के अंतर्गत सहायक गतिविधियां ग्रामीण विकास के लिए प्रेरणास्त्रोत के रूप में कार्य कर रही हैं। यह योजना न केवल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक है, बल्कि सामुदायिक विकास और सामाजिक बदलाव के लिए भी एक मजबूत आधार प्रदान कर रही है। इन गतिविधियों के माध्यम से महिलाएँ न केवल अपने परिवारों को बेहतर जीवन दे रही हैं, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक बदलाव ला रही हैं।

इस प्रकार, जीविका परियोजना की सहायक गतिविधियाँ ग्रामीण विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं और आने वाले समय में यह परियोजना और अधिक सफलताओं की ओर अग्रसर करेगी।

Financial Inclusion to All: JEEVIKA's Transformation of Rural Bihar

The story of JEEVIKA, led by the Bihar Rural Livelihoods Promotion Society (BRLPS), is one of inspiration and impact. This pioneering initiative has transformed financial inclusion for rural communities, breaking down long-standing barriers that have historically excluded women and marginalised groups. With a strong focus on empowerment, grassroots development and innovation, JEEVIKA has become a symbol of hope for millions of women across Bihar.

Laying the Foundation: A Vision of Change

At the core of JEEVIKA's strategy is a clear and powerful goal: financial inclusion for all. The project focuses on four main objectives:

A. **Promoting Financial Access:** Providing rural households with access to formal banking services, credit, savings and insurance products.
B. **Empowering Women:** Organising women into self-help groups (SHGs), promoting financial literacy and encouraging entrepreneurship.
C. **Strengthening Local Institutions:** Building community-based structures to ensure long-term impact.
E. **Enhancing Livelihood Opportunities:** Supporting income-generating activities with financial support and guidance.

Building Pillars of Inclusion: SHGs and Federations

The foundation of JEEVIKA lies in its Self-Help Groups (SHGs), small collectives of 10-15 women who pool their

savings into a shared fund. These groups are not just savings pools; they are catalysts for change, promoting financial discipline, supporting mutual growth and building credibility with formal financial institutions.

Beyond individual SHGs, village level organizations at the village, cluster level federations amplify their impact. These community based organizations (CBO) mobilise resources, negotiate with banks and ensure sustainable financial operations. Trained Community Resource Persons (CRPs) support them by guiding SHGs in financial management, compliance and planning.

Pioneering Financial Mechanisms

Innovative financial tools are central to JEEVIKA's strategy. Community Investment Funds (CIF) provide seed capital, helping SHGs address immediate needs and invest in entrepreneurial ventures. Revolving funds offer a sustainable way to manage investments in activities such as agriculture and small businesses.

One of the most impactful innovations is the bank linkage programme, which connects SHGs directly with formal banking systems. These partnerships give rural women access to larger credit facilities, reduce dependence on informal moneylenders and encourage better financial practices. Additionally, JEEVIKA uses digital banking to improve transparency, incorporating mobile banking and cashless transactions into its processes.

Empowering Through Education

Financial literacy is key to JEEVIKA's success. Through workshops and practical training, women learn about savings, loans and insurance products. Community Resource Persons (CRPs) play a vital role in simplifying complex concepts, using tools like visual aids and manuals designed for rural literacy levels.

This capacity-building effort has created a generation of financially confident rural women who can effectively manage their finances and engage with formal banking systems.

Insuring Against Uncertainty

financial vulnerability is a significant challenge for underprivileged rural communities, particularly in Bihar. Sudden health emergencies, accidents, or untimely death of an earning member can push families into poverty. To mitigate these risks, JEEVIKA has been actively promoting social security schemes like Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana (PMJJBY) and Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojana (PMSBY). These schemes provide affordable life and accident insurance, ensuring financial resilience for rural households. Around 65 percent of SHG household are covered under this schemes and more than 10,000 death claim has been settled.

A Transparent and Accountable System

Transparency and accountability are at the heart of JEEVIKA's operations. Regular audits of CBOs by professionals and a move to digital record-keeping ensure careful financial management. These measures not only build trust among SHG members but also increase confidence in financial institutions.

The Impact: Transforming Lives

JEEVIKA has reached over 10.31 million households across 534 blocks in Bihar. The project's achievements include:

- **Economic Empowerment:** Increased household income through access to credit and diverse income sources.
- **Strengthened Community Bonds:** SHGs encourage collective decision-making, mutual support and shared responsibility.
- **Improved Financial Practices:** Members develop disciplined savings habits, timely loan repayments and strategic investments.

Overcoming Challenges and Looking Ahead

JEEVIKA's journey has faced challenges. Ensuring the long-term success of SHGs, bridging gaps in digital and financial literacy and reaching the most marginalised groups are ongoing concerns. However, the project's future strategies offer hope:

- Expanding digital financial services
- Strengthening partnerships with banks, insurance providers
- Adopting sustainable, climate-resilient livelihood models.

A Model of Collaboration

JEEVIKA's success highlights the power of partnerships. Banks, insurance companies and government agencies have all played key roles in this transformation, providing credit, tailored products and policy support.

The Road Ahead

JEEVIKA is more than just a project; it is a movement reshaping financial inclusion in India. By empowering rural communities and prioritising women's leadership, it offers a model for sustainable development that can be replicated. With ongoing innovation and collaboration, JEEVIKA is poised to unlock even greater potential, creating an inclusive financial ecosystem for future generations.

Empowering Rural Bihar through Digital Transformation: The Role of MIS in JEEVIKA's Success

JEEVIKA in rural Bihar aims to empower communities through sustainable livelihoods and other initiatives. The project focuses on creating self-managed Community-Based Organisations (CBOs) and increasing income through sustainable livelihood activities. JEEVIKA has implemented various projects, including the National Rural Livelihood Mission (NRLM) and the Satat Jeevikoparjan Yojana (SJY), covering all 534 blocks in the state. Data management plays a crucial role in this journey of social transformation, with the Management Information System (MIS) becoming a key tool for informed decision-making and effective programme management and implementation.

MIS collects, stores, analyses and shares data to support management functions and decision-making. JEEVIKA has developed several MIS apps and web-based applications to gather information from grassroots levels across different interventions. During implementation, JEEVIKA has also created an IT-based system for data entry and monitoring at community institutions level.

The organisation has launched an MIS to support CBOs at three levels: Self-Help Groups (SHGs), Village Organisations (VOs) and Cluster Level Federations (CLFs). BRLPS focuses on areas such as Microfinance, Social Development, Livelihood Enhancement and Skills, each supported by mobile apps and Enterprise Resource Planning (ERP) solutions. Over 50 in-house mobile applications have been developed and are actively used, allowing grassroots workers to report data efficiently and streamline operations. For upper management, the MIS and mobile

apps provide real-time data, enabling informed decision-making, performance tracking and efficient resource management. The system supports various thematic interventions by digitising processes and offering real-time insights into operations at the grassroots level.

Strengthening Livelihoods through Digital Tools: In the farming sector, applications like the Value Chain MIS help manage the aggregation, quality monitoring, and payment processes for farm products. The Neera Application tracks the production and sale of Neera products, managing related assets. The Agri-Entrepreneur Service Application collects data on farmer transactions, seed and fertiliser needs, and other services provided by agri-entrepreneurs.

In the non-farm sector, JEEVIKA uses ERP solutions for Didi Ki Rasoi, Stitching, Rural Retail Mart and Bag Cluster intervention to improve efficiency, transparency and growth for rural businesses. Didi Ki Rasoi helps community kitchens run by SHG members, manage meal preparation, inventory and finances. The Stitching ERP system supports stitching clusters by tracking production, raw materials and sales, ensuring timely deliveries and cost savings. The Rural Retail Mart ERP system integrates inventory and sales management, boosting competitiveness and market access. The Bag Cluster ERP digitises production and quality control for bag-making businesses, improving productivity and meeting deadlines. These tools empower rural women entrepreneurs, fostering financial independence and sustainable economic growth in rural areas.

In the livestock sector, digital tools like the e-Goatry mobile and web applications, Poultry App and Fisheries App help women manage and grow livestock-related businesses. The e-Goatry app tracks beneficiaries, goat distribution, supplier details and financial progress for the Integrated Goat and Sheep Development Scheme. Operated by Pashu Sakhis, these apps ensure accurate monitoring and effective implementation. The Poultry App helps manage poultry units by tracking data on chicks, vaccinations, production and sales, optimising operations and boosting income for SHG members involved in poultry farming. The Fisheries App digitises fish farming activities, including pond mapping, stocking details, production and income tracking, supporting SHG women managing fishery producer groups under the Jal Jeevan Hariyali Mission. These applications improve data accuracy, support better decision-making and empower rural women to achieve sustainable growth in livestock and fishery enterprises.

Enhancing Governance: BRLPS has successfully introduced several digital tools to improve HR, finance and administration. The HRMIS system has been implemented across all 38 districts and 534 blocks, streamlining resignation, transfer and field visit reports. Staff attendance is now tracked through a mobile app, which generates absentee reports. The e-Office application, a National Informatics Centre tool, enables electronic file processing with Digital Signature Certificates (DSC), speeding up file management for State Project Management Unit (SPMU) officials. The Finance and Procurement modules will be launched soon.

The MIS framework ensures efficiency, transparency and accountability by providing real-time monitoring, automated reporting and centralised data access. It improves accessibility for stakeholders at all levels, from grassroots workers to state-level officials, empowering rural communities by enhancing governance and service delivery. This digital transformation supports BRLPS's mission to strengthen livelihoods, promote rural empowerment and ensure the effective implementation of JEEVIKA initiatives.

Data analytics plays an important role in the organisation, with dashboards designed to explore data and generate reports. The CEO dashboard, which includes features like charts, drill-down functions and maps, allows for real-time data exploration and decision-making. Data analytics is used in both operational and strategic processes.

However, there are key challenges to address. IT infrastructure is essential for supporting the organisation's digital transformation and boosting rural development efforts. This includes maintaining and upgrading existing systems, ensuring secure cloud hosting with minimal downtime and scaling the infrastructure to support growing activities, such as digital centres at CLFs.

The availability of devices like desktops, tablets and smartphones is vital for speeding up digitisation at the grassroots level. Improving existing apps to make them more user-friendly for community members is also an ongoing focus for the MIS team. Finally, rolling out an app and ERP solution to rural women professionals with limited digital literacy presents challenges such as low awareness of technology, access barriers and resistance to change.

The ongoing digitisation efforts within BRLPS, through the rollout of mobile apps and web-based data entry systems, are ensuring timely and accurate information sharing. To fully realise the potential of this transformation, strengthening the existing IT infrastructure and enhancing the capacity of staff at the block and district levels, along with community professionals, will be essential. This collective effort will drive progress and ensure the successful implementation and long-term impact of digital initiatives across the state.

Strengthening JEEVIKA's Effectiveness through M&E and Research

Monitoring and Evaluation (M&E) is a key part of project management. It helps track a project's performance and explains why it is at a certain stage. A strong M&E plan, along with proper research and documentation under the Bihar Rural Livelihoods Promotion Society (BRLPS), plays a major role in improving project outcomes.

The goal of M&E and research is to connect project monitoring with scientific evaluations and in-depth studies, working closely with project teams. The M&E activities under BRLPS support the overall management of the project and shape the organisation's structure, operations and culture. These activities are designed to ensure accountability at all levels, making sure the project meets both upward and downward expectations, as well as horizontal accountability.

Major Activities under BRLPS

The key activities under BRLPS include:

A. Process Monitoring: In community-driven projects, the processes often do not follow set rules, deadlines or targets. Therefore, BRLPS has a flexible and adaptive monitoring system. Process monitoring ensures that project activities are carried out properly and that financial aspects are managed correctly. It helps the project team understand how inputs are turned into outputs, identifies critical issues and suggests actions to improve the effectiveness of interventions.

The goal of process monitoring is to assess whether the processes are close to what was intended and, if not, explain the reasons for any deviations and what needs to be done to improve. It is a vital tool for staff at the state, district and block levels, particularly for process-driven projects and encourages participatory and demand-responsive approaches.

BRLPS uses two approaches for process monitoring:

i. **External agencies:** These are hired at the state level to monitor interventions in all 38 districts, including the functioning of Self-Help Groups (SHGs), Village Organisations (VOs) and Cluster Level Federations/Model Cluster Level Federations (CLFs/MCLFs) across various sectors like farming, livestock, skills, health, WASH, etc.

ii. **Internal community process monitors:** A Community-Based Monitoring System (CBMS) is in place, where Community Resource Persons (CRPs) are trained to monitor processes in parallel with external agencies. These monitors focus on the basic functioning of SHGs and VOs and share their observations with the project teams.

Process monitoring offers several benefits:

- It acts as a third eye, uncovering issues that regular monitoring may miss.
- It tracks qualitative changes in the community during the project.
- It provides feedback to the community on how to improve their processes.
- It helps assess hard-to-measure shifts in community attitudes, behaviour and practices.
- It ensures adherence to JEEVIKA's processes and procedures.
- It suggests changes to improve the functioning of Community-Based Organisations (CBOs) and interventions.

The process monitoring system includes a feedback loop, both horizontally (across blocks, districts and states) and vertically (from management to field teams and back). This loop tracks challenges in social and political mobilisation, empowerment, civic engagement and the entrepreneurial capacity of members. The findings from process monitoring are important for understanding the quality, successes, failures and challenges of the project and serve as valuable learning tools for future improvements.

B. Impact Evaluations and Thematic Studies: In collaboration with external agencies, BRLPS conducts comprehensive impact evaluations and thematic studies to understand the effects of the project and its processes. These evaluations assess how the project's interventions have directly impacted the economic and social well-being of rural households. The studies measure the project's success in achieving its goals, with a particular focus on Project Development Outcomes.

The evaluation also looks at broader impacts such as changes in income, food security and household sanitation, helping to identify how much JEEVIKA's initiatives contributed, independent of other factors. A large sample of households was studied across three stages: baseline, midline and endline. This approach provided a comparative analysis of households involved with JEEVIKA and those that were not.

For example, in the latest impact assessment, income-generating activities, annual household income and dietary diversity all showed significant improvements, even during challenges like the Covid-19 pandemic. The evaluation revealed that the project not only met but exceeded its targets, proving its resilience and ability to adapt.

These insights highlight the importance of evidence-based learning in shaping development strategies. They allowed for adjustments during the project, ensuring resources were used effectively and that interventions were in line with local needs. The findings also contribute to policy discussions and provide a model for future rural development programmes in Bihar and beyond, supporting poverty reduction and socio-economic transformation.

C. Annual Action Plan (AAP) Preparation and Report Publication: The M&E framework of BRLPS is key to effective planning, tracking progress and reporting for the project. Preparing the AAP involves collaborative planning across various teams at the state, district and block levels. This ensures that the project's objectives are aligned and that measurable targets are set for resource allocation and activity implementation.

Progress is tracked regularly — weekly, monthly and quarterly — with real-time alerts through apps or email to flag any deviations, allowing the team to take corrective action quickly. Reports like the Process Monitoring and Community-Based Process Monitoring Reports provide valuable insights into implementation, highlighting challenges, successes and areas for improvement.

Documents such as the Quarterly Progress Report, Annual Progress Report and Impact Evaluation Reports ensure transparency, accountability and data-driven decision-making. These reports summarize achievements, financial usage and assess the effectiveness of interventions, which guide future planning.

By preparing the AAP and producing thorough reports, the M&E framework supports continuous learning, flexible management and helps BRLPS achieve its goal of sustainable rural development.

D. Training and Capacity Building of Staff: Training and capacity building for M&E managers improve skills, ensure data quality and support evidence-based decision-making. These initiatives give managers the expertise to track project progress, evaluate outcomes accurately and provide useful insights for improvement.

By promoting a culture of learning and adaptation, training programmes help organisations build stronger capabilities, improve performance management and achieve better project results. Investing in the development of M&E managers is crucial for creating resilient organisations that can deliver lasting impact over time.

E. M&E Activities for Decision-Making: The main goal of M&E activities is to provide timely and accurate information to support decision-making, allowing project management and staff to take necessary corrective actions. Under JEEVIKA, the M&E system will be further strengthened to act as a key tool for management and decision-making.

The M&E team is actively involved in monitoring project interventions, holding weekly and monthly review meetings at all levels. In addition, regional review meetings are held, providing an opportunity to connect with block teams, especially Block Project Managers (BPMs) and district officials. This helps overcome the limitations of state-level meetings alone.

Regional review meetings offer deeper insights into the progress of various interventions and the factors affecting their success. Block and district rankings are also done based on set indicators, helping assess which areas are performing well. This enables teams to focus on improving performance in areas with lower rankings.

The M&E system uses monitoring, evaluation and learning to track changes, assess the project's effectiveness and identify challenges in design and implementation. This provides ongoing feedback to project management, helping with timely decisions, adjustments and the evaluation of project outputs, outcomes and impacts. It also aims to turn field experiences into valuable knowledge, which can be shared more widely.

ग्रामीण विकास में ज्ञान प्रबंधन और संचार की भूमिकाः समृद्धि की दिशा में साधनों का सही उपयोग करती जीविका

ग्रामीण विकास के क्षेत्र में ज्ञान प्रबंधन और संचार की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ज्ञान प्रबंधन और संचार जीविका और ग्रामीण समुदाय के मध्य सेतु का कार्य करता है। ज्ञान प्रबंधन और संचार के माध्यम से ज्ञान और सूचनाओं का विश्लेषण, संग्रहण तथा समयानुसार उनको प्रसारित एवं प्रचारित किया जाता है। इसके माध्यम से ग्रामीण समाज में अभूतपूर्व बदलाव लाया जा रहा है बशर्ते की यह सरल, स्थायी और समय की मांग के अनुसार प्रतिक्रियाशील हो। इसके तत्व ग्रामीण समुदायों के सर्वांगीण विकास में समग्र रूप से सभी हितधारकों को सूचना और ज्ञान को सुगमता से पहुंचाकर उन्हें सशक्तिकरण का अवसर प्रदान कर रहे हैं।

बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति (जीविका) राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और एन.आर.एल.एम के ज्ञान प्रबंधन और संचार से सम्बंधित दिशा–निर्देशों का अक्षरशः पालन करती है। जीविका में ज्ञान प्रबंधन और संचार अपने त्रिस्तरीय इकाईयों यथा प्रखंड परियोजना क्रियान्वयन इकाई, जिला परियोजना समन्वयन इकाई और राज्य परियोजना प्रबंधन इकाई के साथ ही साथ सम्बंधित हितधारकों के लिए क्रॉस–लर्निंग प्लेटफार्म तैयार करती है जिसके माध्यम से परस्पर ज्ञान एवं सूचनाओं का आदान–प्रदान करके परियोजना को सतत एवं सुचारू रुप से लाभान्वित किया जा सके।

जीविका में ज्ञान प्रबंधन और संचार का मुख्य उद्देश्य यह है कि सुगमता से ज्ञान का प्रबंधन करते हुए जीविका कर्मी एवं ग्रामीण समुदाय के हितधारकों को प्रासंगिक और समयानुकूल सूचना उपलब्ध कराया जा सके। विकासात्मक कार्य अपने लक्षित जनसमूह तक तभी पहुँच स्थापित कर सकती है जब इससे सम्बंधित ज्ञान और सूचनाओं का प्रसार प्रभावी तरीके से किया जा सके। संचार इस प्रक्रिया में बेहतरीन माध्यम बनकर उभरता है– उदहारण के लिए इसके माध्यम से नीति निर्धारकों को लाभार्थियों से सीधे तौर पर संवाद स्थापित करने में सहायता मिलती है तथा लाभार्थियों को भी अपनी जरूरतें, आकांक्षाएं और मुद्दों पर प्रतिक्रिया का अवसर प्राप्त होता है।

यह लेख ज्ञान प्रबंधन और संचार की भूमिका पर प्रकाश

डालता है और बताता है कि कैसे जीविका इन साधनों का उचित और समयानुकूल उपयोग करके समृद्धि व विकास की दिशा में अग्रसर है।

जीविका में ज्ञान प्रबंधन और संचार का प्रयोग कर ग्रामीण विकास के पहिया को गतिशील एवं प्रगति के पथ पर अग्रसर रखने हेतु निम्नलिखित रूप से किया जाता है–

ज्ञान प्रबंधन और संचार की भूमिका :

1. सूचना का संग्रहण और संगठन

प्राप्त सूचनाओं का प्रभावी संग्रहण और संगठन ज्ञान प्रबंधन में अति महत्वपूर्ण है। इस प्रक्रिया के माध्यम से समुचित जानकारी को हितधारकों तक साझा करने में तथा नीति निर्धारण में सहायता मिलती है।

- **डेटा संग्रहण :** जीविका विभिन्न स्रोतों से डेटा एकत्रित करती है, जिसमें सर्वेक्षण, फील्ड रिपोर्ट्स, केस स्टडी का डॉक्यूमेंटेशन, विडियो डॉक्यूमेंटेशन, फोटोग्राफ्स, विभिन्न विषयगत मासिक प्रतिवेदन और सामुदायिक बैठकों से प्राप्त जानकारियां शामिल होती हैं।
- **ज्ञान का संगठन :** एकत्रित जानकारी को सुव्यवस्थित तरीके से संग्रहित किया जाता है जिससे इन जानकारियों को आसानी से पुनः उपयोग और विश्लेषित किया जा सके।

2. ज्ञान का आदान–प्रदान और प्रसार

ज्ञान का आदान–प्रदान और प्रसार विकासात्मक कार्य के सुचारू रूप से फलीभूत करने हेतु अतिआवश्यक है। यह प्रक्रिया समुदायों को नवीनतम, प्रासंगिक जानकारी और सर्वोत्तम उपलब्ध विकल्पों से अवगत कराती है।

- **कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम :** जीविका अपने कर्मियों, सामुदायिक संसाधन सेवियों एवं ग्रामीण क्षेत्र के लाभार्थियों के लिए नियमित रूप से कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है, जिसके माध्यम से उन्हें नवीनतम तकनीकों और रणनीतियों के बारे में प्रशिक्षित कर उनका क्षमता वर्द्धन किया जाता है।
- **सूचना, शिक्षा और संचार सम्बंधित संसाधन –पुस्तिकाएं/ का वितरण :** ज्ञान प्रबंधन के तहत जरुरी और प्रासंगिक सूचनाओं से सुसज्जित संसाधन–पुस्तिकायें यथा मार्गदर्शिकाएँ, हैंडबुक्स, लीफ्लेट्स आदि का वितरण किया जाता है।

3. नवाचार और शोध

आज के प्रतिस्पर्धी वातावरण में जहाँ नित्य नए आविष्कार और खोज हो रहे हैं वहां ज्ञान प्रबंधन तथा संचार के क्षेत्र में भी नवाचार और शोध बेहद जरुरी हो जाते हैं। यह तत्व नई तकनीकों और रणनीतियों के विकास में मदद करते हैं, जो ग्रामीण विकास को गति प्रदान कर रहे हैं।

ग्रामीण विकास से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित जीविका अंतर्गत क्रियाशील विभिन्न गतिविधियों और क्रियाकलापों से सम्बंधित शोधपरक सूचना और जानकारियों को प्रबंधित और संग्रहित किया जाता है।

4.संचार के माध्यम से समुदायिक जागरूकता

संचार जन–जागरूकता हेतु एक आवश्यक माध्यम है। यह प्रक्रिया समुदाय के सदस्यों को सूचित,शिक्षित और सशक्त बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामुदायिक आवर्ती बैठकों के माध्यम से उपस्थित सदस्यों को विभिन विषयों यथा बचत, स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता, सरकारी योजनाएं आदि पर शिक्षित एवं जागरूक किया जाता है। इसमें स्वयं सहायता समूह के बैठकों के पंचसूत्र (साप्ताहिक बैठक, साप्ताहिक बचत, आपसी लेन–देन, नियमित ऋण की वापसी और नियमित लेखा–जोखा) का पालन किया जाता है और सिखाया जाता है। सामुदायिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन जीविका दीदियों और सामुदायिक कैडरों के साथ किया जाता है। इस संवाद कार्यक्रम में जीविका दीदियों को जीविका परियोजना से सम्बंधित सम–सामयिक क्रियाकलापों के बारे में जानकारी देने के साथ–साथ सरकार से जुड़ी योजनाओं की जानकारी प्रदान की जाती है

जीविका के ज्ञान प्रबंधन और संचार के साधन

1. डिजिटल प्लेटफार्म्स/ सोशल मीडिया

आज सोशल मीडिया का प्रादुर्भाव ग्रामीण विकास में संचार क्रांति को सबल और आसानी से दूरस्थ क्षेत्रों में पहुँचने वाला माध्यम बना दिया है। इसके माध्यम से जीविका ज्ञान प्रबंधन

और संचार को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। इस हेतु जीविका ने विभिन्न मोबाइल ऐप्स विकसित किए हैं, जो समुदाय के सदस्यों को महत्वपूर्ण जानकारी और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करते हैं तथा जीविका को क्षेत्र से मासिक प्रतिवेदन के माध्यम से प्रतिवेदन प्राप्त करने में भी सहायक होटा है।

2. सहयोग और साझेदारी

सहयोग और साझेदारी ज्ञान प्रबंधन और संचार को बढ़ावा देने के महत्वपूर्ण तत्व हैं। जीविका के द्वारा समयानुसार और जरुरत के हिसाब से Resource Organization के साथ समन्वय स्थापित कर कर्मियों, जीविका दीदियाँ तथा कैडरों का प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा ज्ञान का आदान–प्रदान किया जाता है।

3. केस–स्टडि/ विडियो प्रोडक्शन/ पत्रिकायें

जीविका मासिक रूप से अपने–अपने क्षेत्र में बेहतरीन कार्य कर रही जीविका दीदियों एवं कैडरों का केस–स्टडि आलेख और विडियो तैयार करती है, तत्पश्चात मासिक, त्रैमासिक तथा वार्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है।

4. पिको–प्रोजेक्टर

सामुदायिक संगठनों के स्तर पर पिको–प्रोजेक्टर का प्रयोग कर सूचनाओं और ज्ञान का प्रसारण जीविका दीदियों के मध्य उनका क्षमता वर्धन के लिए किया जाता है। यह एक पोर्टेबल प्रोजेक्टर होता है जिसके माध्यम से दूरस्थ स्थानों पर भी आसानी से इसे ले जाया जा सकता है। इसका प्रयोग कर्मियों एवं कैडरों के प्रशिक्षण हेतु, सामुदायिक संगठनों में जागरूकता से सम्बंधित वीडियो, राष्ट्रीय और राज्य के स्तर पर चल रहे अभियानों से सम्बंधित वीडियो सामग्री आदि का प्रसारण किया जाता है। इसे प्रयोग करना बेहद आसन होता है तथा इसे मोबाइल फ़ोन के माध्यम से भी संचालित कर सकते हैं, जिसके कारण इसकी व्यापक पहुँच समुदाय के लोगों खासतौर पर जीविका दीदियों के मध्य और भी व्यापक हो जाती है।

ग्रामीण विकास में ज्ञान प्रबंधन और संचार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह तत्व न केवल ग्रामीण समुदायों के सशक्तिकरण में मदद करते हैं, बल्कि समग्र विकास के लिए आवश्यक सूचना और ज्ञान को सुगम बनाते हैं। जीविका ने ज्ञान प्रबंधन और संचार के विभिन्न साधनों का सही उपयोग करके ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डिजिटल प्लेटफार्म्स, सूचना का सरल प्रसारण, सहयोग और साझेदारी के माध्यम से जीविका ने समुदायों को सशक्त बनाया है और समृद्धि की दिशा में अग्रसर है। इन प्रयासों के माध्यम से जीविका न केवल ग्रामीण विकास को गति प्रदान कर रही है, बल्कि एक स्थायी और समृद्ध समाज के निर्माण में भी योगदान दे रही है।

दीदी की कहानी दीदी की जुबानी

केस–1 पिको प्रोजेक्टर

पिको प्रोजेक्टर के माध्यम से समूह में जागरूकता

संचार के विभिन्न माध्यमों ने आम जनमानस तक सूचनाओं को सुलभता से उपलब्ध कराया है स सुचना का माध्यम अगर एक साथ, दीखाने,बताने, सुनाने और समझाने के प्रारूप में हो तो विषय वस्तु को समझना और आसान हो जाता है। जिसका प्रतिफल रहा कि प्राप्त सूचनाओं से लोग लाभान्वित होकर समाज के नव निर्माण में अहम् भूमिका अदा कर रहे हैं। सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में अब इलेक्ट्रोनिक माध्यम भी बड़ी आसानी से आम जनमानस तक सूचनाओं को पहुँचाने में कारगर रहे

हैं। उन्ही माध्यमों में से एक है पिको प्रोजेक्टर। यह एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से विडियो फिल्म और डाक्यूमेंट्री आदि अपेक्षाकृत कम लागत में दिखाकर लक्षित दर्शकों तक हम अपनी बात पहुंचा रहे हैं और लोग लाभान्वित हो रहे है। बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जीविका भी अपमे सामुदायिक संगठनो में पिको प्रोजेक्टर के माध्यम से जन जागरूकता अभियान से सम्बंधित विडियो फिल्म और डाक्यूमेंट्री आदि दिखाकर ग्रामीण परिवेश के लोगों को लाभान्वित कर रही है। पिको प्रोजेक्टर द्वारा समूह से जुडी महिलाओं के क्षमतावर्धन एवं उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम दिखाए एवं बताए जा रहे है। मसलन एक ग्रामीण गरीब महिला की फिल्म उन्हें दिखाई जा रही है कि कल तक अत्यंत ही गरीबी रेखा से नीचे गुजर–बसर करने वाली वो महिला अब स्वयं सहायता समूह से जुड़कर, समूह से ऋण लेकर किस तरह खुद का व्यवसाय करते हुए आर्थिक एवं सामाजिक तौर पर सशक्त हुई है। इस तरह के जागरूकता से सम्बंधित लघु फिल्मो को देखकर स्वयं सहता समूह से जुडी महिलाएं अपने अन्दर आत्मसात कर रही हैं और स्वावलंबन की राह पर हैं। ग्रामीण परिवेश की महिलाओं एवं किशोरियों को उनके स्वास्थ्य एवं पोषण से सम्बंधित कई प्रकार के लघु फ़िल्म दिखाकर लाभान्वित किया जा रहा है वही स्वयं सहायता समूह से जुड़कर आये बदलाव, जीविका दीदी के रूप में महिला स्वावलंबन एवं सशक्तिकरण से सम्बंधित फिल्म दिखाकर उन्हें और बेहतर जीवन जीने की राह दिखाई एवं बताई जा रही है। समय–समय पर जन जागरूकता कार्यक्रम से सम्बंधित लघु फिल्म, महिला दिवस जैसे आयोजन के अवसर पर भी पिको प्रोजेक्टर के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकार एवं कर्तव्य आदि से रूबरू का कार्य जा रहा है। वेबिनार और लाइव कार्यक्रम भी जीविका दीदियाँ देख रही हैं, समझ रही हैं और लाभान्वित हो रही है। सामुदायिक पेशेवर पिको प्रोजेक्टर का संचालन करती हैं इसके एवज में उन्हें पारिश्रमिक भी प्रति शो के हिसाब से दिया जाता है। सामुदायिक पेशेवर मांग एवं उपलब्धता के आधार पर समूह , ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ में लघु विडियो दिखाती हैं और अंत में उस फिल्म के मायने भी समझाती है। यह माना गया है कि पढने के बजाय देखकर और सुनकर वस्तु विषय के बारे में जानकारी आसानी से हो जाती है। लिहाजा पिको प्रोजेक्टर ने ग्रामीण परिवेश में आर्थिक एवं सामाजिक क्रांति का मौन आगाज किया है। समूह से जुडी महिला एवं उनके परिवार के विकास एवं जानकारी मुहैया कराने में पिको प्रोजेक्टर की महती भूमिका है। वर्तमान समय में समूह के दीदियों के बीच मतदाता जागरूकता अभियान से सम्बंधित संदेश एवं डाक्यूमेंट्री आदि दिखाकर मतदान प्रतशत बढ़ाने की कोशिश जारी है। सन्देश और लघु फिल्मो को देखकर समूह में जागरूकता आ रही है।

बड़की दीदी

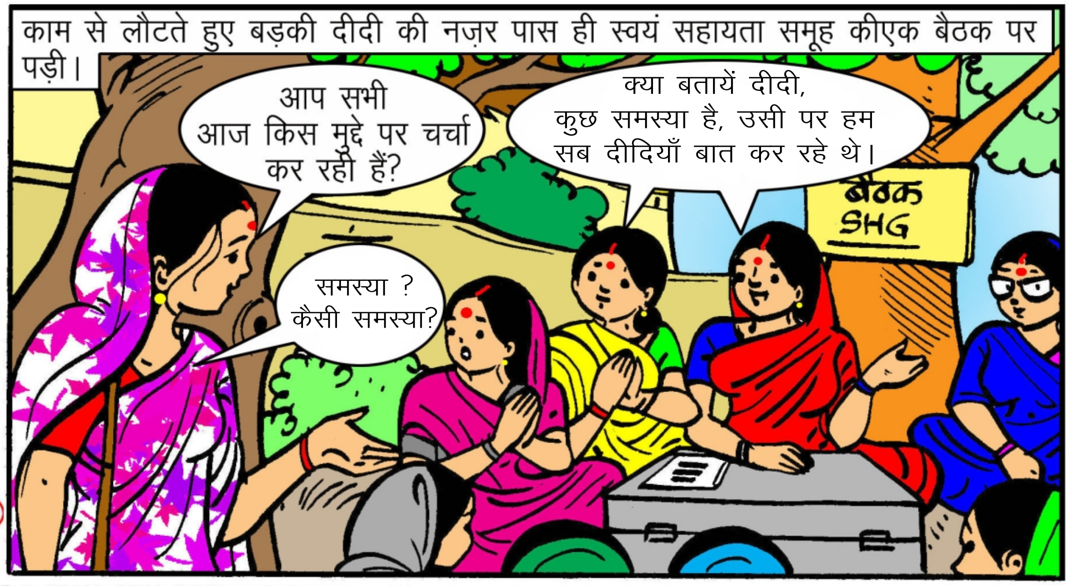
काम से लौटते हुए बड़की दीदी की नज़र पास ही स्वयं सहायता समूह कीएक बैठक पर पड़ी।
आप सभी आज किस मुद्दे पर चर्चा कर रही हैं?
क्या बतायें दीदी, कुछ समस्या है, उसी पर हम सब दीदियाँ बात कर रहे थे।
बैठक SHG
समस्या ? कैसी समस्या?

एक समस्या हो तो बताएं दी... समूह में सब ठीक नहीं चल रहा है?
दीदी हमें समय से ऋण नहीं मिलता है।
दीदी, मेरा जो मानदेय है, वह न तो समय पर मिलता है और न पूरा मानदेय मिल रहा है

यदि ऐसा है तो फिर आपलोगों ने अभी तक इसकी शिकायत क्यों नहीं की?
शिकायत ? पर कहाँ करें दीदी?

आपके संकुल संघ में "सामुदायिक शिकायत प्रबंधन एवं निवारण प्रणाली" में शिकायत करने की व्यवस्था की गई है
सामुदायिक शिकायत प्रबंधन एवं निवारण प्रणाली का मतलब ??

सामुदायिक शिकायत प्रबंधन एवं निवारण प्रणाली का गठन समूह के सदस्यों के समस्याओं के निदान के लिए किया गया है। इस प्रणाली में दीदी लोगों का परियोजना से सम्बंधित शिकायतों का निवारण समुदाय द्वारा किये जाने की व्यवस्था की गई है।
अच्छा दीदी कृ ई तो हमलोगों को पता ही नहीं था

पवन कुमार प्रियदर्शी
परियोजना प्रबंधक, संचार

मन की कलम से

जीविका की व्यवस्था, शिकायत निवारण की बयार

गाँव–गाँव में चल पड़ी, जीविका की मीठी बयार,
स्वरोजगार की चाह में, जगा जन–जन का प्यार।

जब दु:ख के बादल छा जाएं, उम्मीद की किरणें भी खो जाएँ,
समुदाय की पीड़ा में जीविका बिहार, जीवन की राह दिखाएँ ।

समस्या हो कोई भी, या हो किसी की पीर,
जीविका की टोली, सुने हर दिल की धीर।

हर द्वार पर दस्तक दे, समस्याओं को सुने एक समान,
एक–एक मुद्दा हल करें, न कोई रहे परेशान।

बच्चों की पढ़ाई हो या हो रोजगार का सवाल,
जीविका की पहल से, सुलझे सबके हाल।

सुनवाई हो हर समस्या की, समाधान मिले हर क़दम पर,
समाज का हर व्यक्ति खुश हो, विकास हो हर एक घर।

महिलाओं के हाथ में शक्ति, संगठनों की बुनियाद,
सपनों को साकार करें, मिले सबको नई आज़ाद।

आओ मिलकर कदम बढ़ाएँ, एकता का संकल्प उठाएँ,
जीविका के साथ चलें, बिहार को खुशहाल बनाएँ ।

Pawan Kumar Priyadarshi
Project Manager Communication

जल – जीवन – हरियाली

बढ़ रहा है ताप
पिघल रही है बर्फ
जम रही है काई

उस पर से कभी सूखा
कभी बेमौसम बारिश
ले अंगड़ाई

संभलो कि इसकी
कभी न हो पाएगी भरपाई

जहां जल है
वहीं होगी हरियाली
बीच में होगा जीवन

सुंदर – सुंदर
खुशहाल हमारा जीवन

Suman Kumar
Manager Communication, Kishanganj

रचना आमंत्रण

जीविका द्वारा 'चेंजमेकर्स' (द्विभाषीय – त्रैमासिक) पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका में जीविका सम्पादित गतिविधियों / कार्यक्रमों / सफलता की कहानियों के प्रकाशन के साथ ही विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे जीविका कर्मियों के अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है। जीविका कर्मियों से आग्रह है कि वे जीविका से जुड़े अपने अनुभवों / सफलता की कहानियों / कविता / गतिविधियों आदि को 'चेंज मेकर्स' में प्रकाशन के लिए भेजें। रचना हिन्दी और अंग्रेजी या दोनों में से किसी भी भाषा में हो सकती है। रचना के साथ उससे संबंधित तस्वीरें अवश्य संलग्न हों। रचनाकार अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता और संपर्क नंबर का उल्लेख अवश्य करें। रचना को निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं–

changemakers.brlp@gmail.com

प्रकाशन योग्य रचनाओं को रचनाकार के नाम के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।
– संपादकीय टीम, चेंजमेकर्स ,

• EVENTS

On the occasion of
World Environment Day,
Additional CEO, JEEVIKA,
led a plantation drive, reinforcing
commitment to a
sustainable and eco-friendly future.

JEEVIKA Didis lead
the way in fostering voter awareness
through
a Community-led
Election Awareness Program.

On the occasion of World Yoga Day,
JEEVIKA Didis embraced
the power of yoga,
promoting health, balance,
and inner strength.

The inauguration
and implementation of
'JEEVIKA Didi Ki Rasoi'
at SC/ST School, Nalanda

बिहार सरकार

JEEVIKA

Rural Development Department,Govt. of Bihar
Vidyut Bhawan - II,1st & 3rd Floor, Bailey Road, Patna- 800 021
Ph.%+91-612-250 4981 :% Fax % +91-612-250 4960,
Website % www.brlp.in :% E-mail % ceo@brlp.in